Indian Journal of Social Sciences and Literature Studies
ISSN 2349-5634 (Print) ISSN 2455-0973 (Online)
Vol. 5, Issue 1, March 2019

वैदिक धर्म और संस्कृति

Vaidik Religion and Culture

डो०हिता यु० राजयगुरु

कवि श्री बोटादकर आर्टस-कोमर्स कालेज, बोटाद

भारतीय धर्म और संस्कृति में वेद का स्थान बहोत महत्वपूर्ण है।वर्तमान समय में प्रचलित धर्म और संस्कृति का आधार भी वेद ही है । इसलिए अगर हमें धर्म और संस्कृति के बारे में कोइ भी बात करनी हो तो वेद को जानना ही होगा । सिर्फ भारत में ही नहीं किन्तु समग्र विश्व में भारतीय धर्म और संस्कृति का गौरवपूर्ण स्थान है उसका कारन भी वेद ही है । इसलिए मनुस्मृति वेद के अध्ययन को ही मुख्य धर्म मानती है ।

वेदमेवाभ्यसेन्नित्यं यथाकालमतन्द्रितः ।

तं ह्यस्याहुः परं धर्मोमुपधर्मोऽन्य उच्यते ।।[१]

हमारी परंपरा भी यही कहती है कि "त्यजेत्सर्वाणि कर्माणि वेदमेकं नसंन्यसेत ।"

प्रायः माना जाता है कि वेद में धर्म की बहोत अभिव्यक्ति हुइ है।वेद में भिन्न भिन्न देवता के स्वरूप,कार्य आदि की अभिव्यक्ति हुइ है,उसके साथ ही एक ही देव परमतत्व की भी अभिव्यक्ति हुइ है ।

वैदिक समय के प्रारंभ में लोग बहोत सरल थे । उसमें बालक जैसा कूतुहल था । प्रकृति के बीच ही बसनेवाले प्रकृति के भिन्न भिन्न रूप से प्रसन्न,प्रभावित होते रहे और उसकी पूजा करते रहे । इसाके कारन हमें उषा,सूर्य,पर्जन्य आदि देवता के सूक्त मिले । उषा की स्तुति करता हुआ हमारा ऋषि कहता हैः

ता आ चरन्ति समना समना पुरस्तात समानतः समना पप्रथानाः ।

ऋतस्य देवीः सदसो बुधाना गवां न सर्गा उषसो जरन्ते ।।[२]

प्राकृतिक तत्व की कोइ भी आश्चर्यकारक घटना को दैवी शक्ति का प्रमाण माना जाता था ।कुदरत की अप्रतिम शक्ति को पीछानते हुए वैदिक ऋषिने इसमें देव का अभिधान किया । क्योकि ये सभी प्रकृति के महान कार्य और स्वरुप के द्रष्टा थे । वे सभी प्रकृति की प्रचंड ताकत के पूजक थे ।

उसके बाद भी ये सभी ऋषी जीसमें से देव का जन्म हुआ इस प्रकृति के तत्व को नहीं भूले थे । इस बात को नजर में रखते हुए ब्लूम फिल्डने कहा है कि -"Its fiercely glowing sun ,its terrible yet life-giving monsoons, the snow mountain giants of the north and its bewilderingly profuse vegetation could hardly fail to keep obtruding themselves as revelation of the powers of the already existing gods."

प्राकृतिक तत्व के बाद वीर पूजा शुरु हुइ और हमें इन्द्र जैसे देवता के सूक्त मिले । इसलिए वेद में सबसे अधिक सूक्त अग्नि और इन्द्र देवता के है । ये सभी सूक्त सिर्फ धर्म के ही है और व्यवहार में उसका कोइ उपयोग नहीं है एसा नहीं था । ये सभी यज्ञक्रिया के भागरुप थे । इसलिए वैदिक धर्म व्यवहार में भी उपयोगी था । यज्ञयाग के समय पुरोहित उसका गान करता है और बदले में यजमान के लिए सुख और समृद्धि की आशा रखता है । ब्लूमफिल्ड अपने ग्रंथ Religion of the Veda में लिखता है कि "Reciprocity, frank, unconditional reciprocity becomes an accepted motive."

वैदिकधर्म की एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि इस धर्म में पुरोहित का स्थान अधिक है ।पुरोहित पद का इतना मान था कि अग्नि देव को भी देवो के पुरोहित का मान दिया गया है । पुरोहित राजा को यज्ञ कराता था और जब आवश्यक हो तब सलाह भी देता था । वे राजा और प्रजा के बीच और राजा और देवता के बीच मध्यस्थी था । वसिष्ठ जैसे समर्थ ऋषि सूर्य वंश के पुरोहित थे । विश्वामित्र जैसे महान ऋषि राजा सुदास के पुरोहित थे । दो राजाओं के बीच जब युद्ध होता था तब ये पुरोहित अपने राजा के लिए देव को प्रार्थना करता था । आहुति के साथ देव का आहवान करता था । प्रसन्न हुए देव जीसके पक्ष में जाते थे उसकी विजय होती थी । जीसके हृदय में श्रद्धा होगी वही देव की कीपा पायेगा एसा ख्याल प्रचलित था ।

वैदिक धर्म मे केन्द्रस्थान पर यज्ञसंस्था थी । पुरा ब्राह्मणसाहित्य उसके आधार पर अस्तित्व में आया है । देव के प्रति कृतज्ञता अभिव्यक्त करने के लिए भिन्न भिन्न यज्ञो का आविष्कार वैदिक धर्म में हुआ है । सबसे पहले यजमान और उसकी पत्नी के द्वारा किये जानेवाले यज्ञ थे,उसमें से ही अश्वमेध और राजसूय जैसे महान यज्ञ का आविर्भाव हुआ । उसके बाद ज्ञान की प्रतिष्ठा हुइ ।

यजमान इस यज्ञ के माध्यम से क्या प्राप्त करना चाहता था? उसे पहले स्वर्ग या अमरत्व की अभिलाषा नहीं थी । उस समय उसके लिए जीवन जीनेके लिए सबसे आवश्यक धन,पशु,पुत्र आदि थे । खुशहाल जीवन जीने के लिए जो आवश्यक है वे सब ये चाहते थे । शत्रु के साथ युद्ध में विजय ,रोग से मुक्ति,बहोत सारा अन्न और पेय अदि वैदिक ऋषि के सुखी जीवन के आदर्श थे । शत्रु का पराभव करने के लिए मन्यु की आराधना करता ऋषि कहता है कि -

अग्नि मन्यो त्विषितः सहस्व सेनानर्निः सहुरे हूत एधि ।
हत्वाय शत्रून वि भजस्व वेद ओजो मिमानो वि मृधो नृदस्व ।।[3]

शत्रु के नाश के साथ समृद्धि भी उसके लिए बहुत महत्वपूर्ण थी । इसीलिए वैदिक ऋषि समृद्धि पाने के लिए अग्नि देव की आराधना करता है ।

त्वं नो अग्ने सनये धनानां
यशसं कारुं कृणुहि स्तवानः ।।[४]

वैदिक ऋषि भिन्न भिन्न देव की स्तुति करते थे लेकिन ये सभी उनके लिए अदभूत और अनन्य थे । इसलिए ही वेद का ऋषि जब जीस देव की स्तुति करता था तब उसी देव को सबसे तेजस्वी, सबसे महान,परम इश्वर के रुप में प्रतिपादित करता था ।

वैदिक धर्म में सत्य,ऋत,ब्रह्म,तपस,यज्ञ आदि का बहोत महत्वपूर्ण स्थान था । सबसे पहला स्थान वैदिक धर्म में सत्य का था उसके बाद ही क्रियाकांड का स्थान था । वैदिक ऋषि सतत सत्य शोधन का प्रयत्न करता था । कीसी भी देव का सारसर्वस्व सत्य को हि माना जाता था । कहा है- "सविता सत्यधर्मा "तैंतीस देव को भी सत्य के साक्षात रुप माने जाते थ । इन्द्र देव को सत्य मानते हुए कहा है-"हम इन्द्र की आराधना करते ह ै वे सत्य है अनृत नहीं "[५] सत्य का पालन सबकी सिद्धि माना जाता था । सत्य के बीना धार्मिक विकास भी संभवित नहीं था । सत्य के पालन को ही सबसे बडा धर्म माना जाता था ।

वैदिक धर्म में जीतना महत्व सत्य का था इतना ही महत्व ऋत का भी था । ऋत या ने वो नियम जीसके आधार पर सारे जगत की गति होती है । इस ऋत के संरक्षक देव वरुण माने जाते है । ये ऋत ही प्रकृति के तत्वो की नियमित गति और व्यवस्था के सूचक है । इसलिए ही ऋषि ऋत को ही सबसै पहले आविष्कृत तत्व मानते है । सूर्य,चन्द्र,उषा आदि प्रकृति के सभी तत्व ऋत के नियम का स्वीकार करते है । इस ऋत के कारन ही सभी व्यवस्था की समतुला बनी रहती है ।

सतत और सखत परिश्रम को हि उत्तम जीवन का मार्ग माना जाता है । देव भी उसीके साथ मैत्रिपूर्ण व्यवहार करते है जो श्रमित होता है। नो ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः ।[६] इसीलिए तपस जीवन में अत्यंत आवश्यक है ।

भगवद गीता में भगवान श्रीकृष्णने भक्ति,ज्ञान और कर्म की जो बात कही है ये बात वेद पर ही आधारित है । धर्म की सबसे सरल अभिव्यक्ति भक्तियोग में दिखाइ देती है । इसमें देव को स्वामि,माता,पिता,बन्धु,मित्र आदि स्वरुप में निरुपित किया जाता है । इन्द्र देव को ऋषि अपने परिवार का सदस्य समजते है । इन्द्र देव के साथ उसका कितना घनिष्ठ सानिध्य दिखाइ देता है ?

त्राता नो बोधि ददृशान आपिर
अभिख्याता मर्डिता सोम्यानाम ।
स्खा पिता पितृतमः पितृणां
कर्तेमु लोकम उशते वयोधाः ।।[७]

इन्द्र देव को पिता मानते है इसी लिए दुःख में वे इसको ही याद करते है । आशा रखते है कि देव उसकी व्यथा हरेगा और समृद्धि प्रदान करेगा ।

मूषो न शिक्षा व्यदन्ति माध्यः
स्तोतारं ते शतक्रतो ।
सकृत सु नो मघवन्निन्द्र
मृळ्याऽधा पितेव नो भव ।।[८]

जैसे चूहा दोरी को काटता है इस तरह व्यथा मुजे अंदर से काट रही है। तुं हम पर दया कर । हे संपत्ति से युक्त इन्द्र,तुं पिता की तरह हम पर दैवी कृपा बरसा ।

वैदिक धर्म का महत्वपूर्ण मार्ग ज्ञान का है। क्यों कि इसमें ज्ञानमार्ग की विचारधारा भी निरुपित है । जीसमें ऋषि देव से रक्षण,दया या स्नेह की कामना नहीं करता किन्तु मेधा,क्तु ,दक्ष या ने बुद्धि ,डहापन,कुशलता की अपेक्षा रखता है। प्रतिभा के प्रकाश को वर्चस कहा गया है । चैतिक शक्ति और प्रतिभा का विकास इच्छता ऋषि अग्नि की आराधना करते हुए कहता है-

यां मेधां देवगणाःपितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ।।[९]

ऋग्वेद के नासदीय,पुरुष आदि सूक्तो में तत्वज्ञान का निरुपन पाया जाता है । ज्यादातर हिन्दुओ का धर्म वैदिकधर्म ही माना जाता है और आज भी सभी हिन्दु इस वैदिक धर्म और उसके साथ जुडी हुइ संस्कुति को सन्मान देते है ।

संदर्भसूचि

१ मनुस्मृति ४ - १४७
२ ऋग्वेद ४ - ५१-८
३ ऋग्वेद १०- ८४- २
४ ऋग्वेद १- ३१- ८
५ ऋग्वेद ८- ६२- १२
६ ऋग्वेद ४- ३३- ९९
७ ऋग्वेद ४- १७ - १७
८ ऋग्वेद १०- ३३- ३
९ यजुर्वेद ३२ - १४